Shodh Sangam Patrika
E-ISSN: 3049-0707, Volume 3 | Issue 1 | (Jan – Mar 2026)

लोकगीत में ऋतुगीतों का महत्त्व

डॉ. हेमलता कुमारी
संगीत शिक्षिका - +2 राम श्रृंगारी कन्या उच्च विद्यालय, कमतौल, जाले, दरभंगा।

सारांश

लोकगीतों का प्रकृति के साथ गहरा संबंध है। लोकगीतों का जन्म तब हुआ, जब शहरी सभ्यता का विकास नहीं हुआ था और सामान्यतः लोग प्रकृति के प्रांगण में निर्द्वंद्व विचरण करते थे। भारतवर्ष में प्रकृति छह बार अपना रूप परिवर्तित करती है, जिससे ऋतु की संज्ञा दी जाती है। यहाँ छह ऋतुओं में ग्रीष्म, वर्षा, शरद, शिशिर, हेमंत तथा बसंत हैं। हर ऋतु का अपना आनंद तथा महत्त्व है। भारतीय समाज सदियों से प्रत्येक ऋतु का जिन गीतों के माध्यम से स्वागत, सत्कार और अभिनंदन करता आया है, उन गीतों को ऋतु गीत कहते हैं। विशेष रूप से लोकगीतों का महत्त्व हमेशा बसंत और ग्रीष्म ऋतु से जुड़ा है। ऋतु गीतों में ऋतु विशेष में होने वाले उत्सव, त्योहारों, पर्वों एवं मेलों से संबंधित गीतों का वर्णन रहता है। प्रत्येक ऋतु के साथ मानव का बाह्य और आंतरिक परिवेश बदलता है। लोकगायक जहाँ बाहरी प्रकृति में होने वाले परिवर्तनों का सूक्ष्म निरीक्षण कर अपनी कलम चलाता है, वहीं मानव मन पर पड़ने वाले प्राकृतिक परिवर्तन के प्रभाव को भी अंकित करता है। बसंत में शृंगार एवं हास्य, ग्रीष्म में वीर एवं रौद्र, वर्षा ऋतु में करुण एवं विरह, भयानक-वीभत्स तथा शरद में शांत और वात्सल्य रस का बाहुल्य लोकगीतों में रहता है। लगभग सभी भारतीय भाषाओं में बारहमासा लिखने की लोक परंपरा जीवित है। हिमाचल की विभिन्न बोलियों में भी इसका स्वरूप देखा जा सकता है।

मुख्य शब्दः लोकगीत, ऋतु, संगीत, मौसम, वाद्ययंत्र, उत्सव, संस्कार, रस

मूल आलेख-

ऋतुगीतों में सबसे अधिक महत्त्व वर्षा ऋतु का माना जाता है। वर्षा या सावन का महीना लोकगीतों की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। यह एक तरह से गीतों का महीना ही कहा जाता है। इस महीने चारों ओर हरियाली छा जाती है। प्रकृति संगीतमय तथा संपूर्ण वातावरण आह्लादित हो जाता है। वृक्षों पर झूले पड़ जाते हैं। मानव प्रकृति के साथ आत्मसात हो जाता है। इस ऋतु में संयोग और वियोग के गीत भी गाए जाते हैं। एक गीत प्रस्तुत है, जिसका भावार्थ है कि सावन आ गया, लेकिन नायक नहीं आया-

आया सावन महीना

सजणा री याद आवंदी

याद आवंदी पल-पल

मन नी लगदा।

वर्षा ऋतु के गीत अन्य ऋतुओं के गीतों की अपेक्षा अधिक सुंदर, मधुर, सुहावने और मार्मिक होते हैं। सावन के गीतों में जहाँ एक ओर हरियाली-खुशहाली का वर्णन मिलता है, वहीं दूसरी ओर विरहावस्था का चित्रण भी मिलता है। झूला झूलते हुए लोग अपना दुख-दर्द भूल जाते हैं और सावन की खुशहाली का पूरा आनंद उठाते हैं-

झूला पड़ा कदंब की डार

झूले राधा प्यारी नार

काहे री डोर, काहे ना लागी पटरी,

काहे ना लगा है हिंडोर रामा, झूला झूला

झूला पड़ा कदंब की डार।

इस प्रकार इन लोकगीतों में वर्षा ऋतु का आगमन जीवन के उत्साह और उमंगों का परिचायक प्रतीत होता है।

बसंत ऋतु से संबंधित लोकगीतः

बसंत ऋतु छह ऋतुओं में सबसे अधिक लोकप्रिय ऋतु है। फरवरी-मार्च और अप्रैल के मध्य यह ऋतु अपना सौंदर्य भी बिखेरती है। ऐसा माना गया है कि माघ महीने की शुक्ल पंचमी से वसंत ऋतु का आरंभ हो जाता है। इस ऋतु के आने पर मौसम सुहावना हो जाता है, सर्दी कम हो जाती है, पेड़ों में पत्ते आने लगते हैं, आम में बौर आ जाते हैं, खेतों में पीले रंग की सरसों लहलहाती है। राग, रंग और उत्सव की दृष्टि से इस ऋतु का विशेष महत्त्व है। इस ऋतु से संबंधित कुछ लोकगीत इस प्रकार हैं-

रुनक झुनक ऋतु बसंती गीतला गांदी आ गई, बसंती आ गई...

आई पंचमी माऊ की

बांटी हरियाली जाऊ की

ऐसी सुहावन बसंत ऋतु आई, चल आ सखी त्रिवेणी नहाई।

शिशिर या शरद तथा हेमंत ऋतु से संबंधित लोकगीतः

भारत की प्रमुख दो ऋतुएँ हैं-शरद या शिशिर ऋतु तथा हेमंत ऋतु। मानसून के पीछे हटने के बाद जब मौसम साफ होने लगता है, इस मौसम को शरद ऋतु का नाम दिया गया है। इसे पतझड़ ऋतु भी कहा जाता है। यह चार शीतोष्ण ऋतुओं में से एक प्रमुख ऋतु है। इस ऋतु में मौसम सुहावना हो जाता है तथा दिन-रात का तापमान सामान्य रहने लगता है। शरद ऋतु को मनोहारी एवं स्वस्थ ऋतु माना जाता है-

शीत ऋतु आई

संग सुनहरा मौसम लाई

हल्की-हल्की ठंडी बहे, बहे बयार

रूप-रंग पर तेरे गोरी खूब चढ़ा श्रृंगार

बोलो शीत ऋतु आई।

शीत ऋतु में गोवर्धन पूजा संबंधी लोकगीत भी गाए जाते हैं। इन लोकगीतों का उदाहरण देखिए-

अरे तेरे सब संकट कट जाए

पूजा गोवर्धन की कर ले

पूजा गोवर्धन की कर ले

अरे तेरे सब संकट कट जाए।

राधे जय-जय राधे, कृष्णा जय-जय कृष्णा

यह धरती, चाँद-सितारे, यह पवन घटा रे

गोवर्धन नाम पुकारे, गिरिराज है सबसे न्यारे।

शरद पूर्णिमा के बाद हेमंत ऋतु का प्रारंभ होता है। प्रायः शरद ऋतु को दो भागों में विभाजित किया जाता है। हल्के गुलाबी जाड़े को हेमंत ऋतु का नाम दिया जाता है और तीव्र तथा तीखे जाड़े को शिशिर ऋतु का नाम दिया जाता है। हेमंत ऋतु में करवा चौथ, दीपावली, भाई दूज आदि तीज-त्यौहार पड़ते हैं। इन सब से संबंधित लोकगीतों की भरमार भारतीय समाज में देखने को मिलती है। हेमंत ऋतु के महत्त्व को स्पष्ट करता एक लोकगीत देखिए-

आई आई हेमंत ऋतु आई

सारस नाचे, मोर भी नाचे

कलियों के संग फूल भी नाचे

आई आई हेमंत ऋतु आई।

बारहमासाः

पावस ऋतु में बारहमासा के गीत गाए जाते हैं। जिन गीतों में पति के वियोग में उसकी विरहिणी स्त्री के द्वारा वर्ष के प्रति मास में अनुभव किए गए कष्टों का उल्लेख रहता हो, उन्हें बारहमासा और जिनमें छह मासों का वर्णन हो, उन्हें छहमासा कहते हैं। इसी प्रकार चौमासा भी होता है। संस्कृत के षट्ऋतु वर्णन की परंपरा के अनुसार ही इन बारहमासों का निर्माण समझना चाहिए। बारहमासा लिखने की परंपरा अत्यंत प्राचीन है। सूफी कवि जायसी द्वारा अपने महाकाव्य *पद्मावत* में बारहमासा का अद्भुत चित्रण किया गया है। आचार्य केशवदास ने भी बारहमासा लिखा है। जैन कवियों में भी बारहमासा लिखने की परंपरा प्रचलित थी। मैथिली लोकगीतों में भी बारहमासा की उपलब्धि होती है। प्रत्येक ऋतु का अपना एक विशेष महत्त्व है। उनसे जुड़े लोकगीत मानव मन की अनुभूतियाँ हैं। प्रकृति से जुड़ी मानव जीवन की हर बाहरी एवं आंतरिक स्थिति-परिस्थितियाँ, हास-उल्लास, विरह-वेदना आदि सभी को इन ऋतुगीतों के माध्यम से स्पष्टतः समझा जा सकता है।

ऋतु एक वर्ष से छोटा कालखंड है, जिसमें मौसम की दशाएँ एक खास प्रकार की होती हैं। यह कालखंड एक वर्ष को कई भागों में विभाजित करता है। भारत में कुल 6 ऋतुओं का वर्णन मिलता है-वसंत, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमंत, शिशिर। सामान्यतः एक ऋतु में दो मास होते हैं। इन ऋतुओं से संबंधित गीतों को ही ऋतुगीत अथवा ऋतुसंबंधी गीत कहते हैं। प्रत्येक ऋतु के अलग-अलग गीत होते हैं, जैसे- वसंत, जो वसंत ऋतु के समय गाया जाता है; कजली, जो वर्षा ऋतु के समय गाया जाता है, इत्यादि। कुछ प्रमुख ऋतुसंबंधी गीत निम्न हैं-

चैतावर

चैत महीने में गाए जाने वाले गीतों को चौतावर कहते हैं। भोजपुरी में इसे 'चैती' कहते हैं। इसमें चैती बहार का वर्णन है। चैत में मधुमास के पदार्पण के कारण चराचर जगत में एक नवीन रस का जीवन में संचार हो जाता है। अतः इस महीने के गीत चैतावर में मधुमास की माधुरी का बड़ा उद्दीपक चित्रण मिलता है। पल्लवों, फूलों, मंजरियों एवं लताओं से जग का

आँगन भर जाता है, फिर इस मादक बेला में भला कामदेव कैसे चूक सकते हैं। फलस्वरूप कामिनियाँ अपने कंत से मिलने को व्याकुल हो उठती हैं। अपने प्रियतम से जिनका मिलन हो जाता है, वे सुख के सागर में डुबकी लगाने लगती हैं, किन्तु प्रियतम से दूर रहने वाली चिर-वियोगिनी का विरहानल तो और भी प्रज्वलित हो उठता है। उनके लिए तो 'चैतावर' मानो अंगार बनकर बरसता है। आम की डाल पर कुहुकने वाली कोयली मानो और आग में घृत डाल देती है। तात्पर्य यह कि चैतावर मुख्यतः प्रेमगीत है और इसमें प्रेम के दोनों पक्षों का उद्घाटन होता है। ऐसे फगुआ और चैतावर दोनों प्रेमगीत हैं, किन्तु फाग में जहाँ संयोग के उल्लास की प्रधानता रहती है, वहाँ चैतावर में वियोग के उच्छ्वास की। आकार में लघु होने पर भी चैतावर गीत सहृदय श्रोताओं के मन पर करारी चोट करता है और उसे विह्वल कर देता है। यही कारण है कि बड़े-बड़े संगीतज्ञ से लेकर चरवाहे तक इस गीत की मादक तान में विभोर हो जाते हैं।

फगुआ

फाल्गुन महीने में गाए जाने वाले गीत को 'फागु' अथवा 'फगुआ' कहते हैं। यह हर्ष, उल्लास तथा उमंग का गीत है। उसमें वसंत की सारी मादकता सिमटकर मानो संगीतमय हो उठती है। इसमें रंग, भंग तथा उमंग की त्रिवेणी प्रवाहित होती रहती है। अबीर-गुलाल से वायुमंडल तो रंगीन हो ही जाता है, इसके अलावा मानव के तन और मन भी रंगीन तथा रसमय हो जाते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि संपूर्ण संसार एक मधुशाला बन गया है, जहाँ पीने और पिलाने के सिवा किसी का और कोई काम नहीं। सचमुच यह गीत आपसी भेदभाव की दीवार को तोड़कर सबको एक डोर में बाँध देता है। यह गीत केवल पुरुषों का नहीं, नारियों का भी है; केवल फुलवारियों और महलों का ही नहीं, अपितु खेतों, खलिहानों और झोपड़ियों का भी। प्रेम, अनुराग और सौंदर्य का रंगीन चित्र उपस्थित करना इसकी दूसरी विशेषता है।

जोगीरा

दो-दो पंक्तियों का जोगीरा इतना फड़काने वाला होता है कि इसके गाने के समय एक समां बंध जाता है। राम अथवा अन्य फुटकर विषयों को प्रश्नोत्तर शैली में गाया जाता है। एक आदमी प्रश्न पूछता है और दूसरा उसका उत्तर देता है। कभी-कभी तो प्रश्न बड़ा ही अश्लील और तीखा होता है। हास्यरस का इससे उत्तम उदाहरण मिलना कठिन है। लोगों को हँसा कर लोट-पोट कर देने की अपूर्व क्षमता होती है जोगीरा में।

कजली

सावन के मनभावन महीने में भोजपुरी प्रदेश में जो गाने गाए जाते हैं, उन्हें कजली कहते हैं। सावन के महीने में प्रकृति सर्वत्र हरी दिखाई पड़ती है और मेघों के आगमन के साथ ही प्रकृति में एक विचित्र प्रकार की मादकता संचरित होती है। महाकवि कालिदास ने भी इसी मादकता और मस्तीपन की ओर संकेत किया है। कजली का नामकरण इन महीनों में घिरने वाले काले बादलों के कारण किया गया है, जो काजल के समान काले-काले आकाश में घूमते दिखाई पड़ते हैं। काजल के समान वर्ण-समता के कारण ही इसका नाम कजली है। भारतेन्दु ने इसे एक पौराणिक कथा से जोड़कर देखा है और लिखते हैं कि-मध्यभारत में दादू राय नामक राजा था, जिसके राज्य में गंगा को कोई मुसलमान छू नहीं सकता था। एक बार उसके राज्य में अकाल पड़ा। उस समय राजा ने अपनी देशभक्ति के बल पर पानी बरसाया। उसके राज्य में रहने वाली स्त्रियों ने अपने दुःख को प्रकट करने के लिए नए राग का आविष्कार किया, जिसे कजली तीज कहते हैं। श्रावण-भादों के शुक्ल पक्ष की तीज का नाम जिस दिन यह गाना खूब गाया जाता है, वही कजली तीज है। हिन्दी के प्रेमधन आदि अनेक कवियों ने कजरी लिखी है।

निष्कर्षः

लोकगीत और ऋतुगीतों का अटूट संबंध है, जो एक-दूसरे के बिना अधूरा-सा प्रतीत होता है। लोकगीत के अंतर्गत पर्व-

त्योहार गीत, कजरी, होरी, चैती आदि विधाओं का गायन किया जाता है, जिसका किसी न किसी ऋतु या पर्व-त्योहार के साथ संबंध अवश्य है। इन त्योहारों का आयोजन ऋतु के आधार पर ही किया जाता है, जिसके कारण इस अवसर पर इन लोकगीतों का गायन अत्यंत मनमोहक सिद्ध होता है।

संदर्भ सूची -

1. मिश्र, कामेष्वर नाथ, काशी की संगीत परम्परा, पृ. 36
2. शर्मा, डॉ. मृत्युंजय, संगीत मेन्युअल, पृ. 84
3. मिश्र, कामेष्वर नाथ, काशी की संगीत परम्परा, पृ. 39
4. सहगल, डॉ. सुधा, बेगम अख्तर व उपशास्त्रीय संगीत, पृ. 03
5. शुक्ल, डॉ. शत्रुघन, ठुमरी की उत्पत्ति विकास एवं शैलियां, पृ. 19
6. संगीत कला विहार, मासिक पत्रिका, मई-1991, पृ. 119
7. जैन, डॉ. शांति, लोकगीतों के सन्दर्भ और आयाम, पृ. 10